ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

आयुर्वेदिक सामग्रीः से पुराणों में एक शास्त्रीय अध्ययन

सविता वर्मा, शोधार्थी (संस्कृत) श्री खुशल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ
डॉ. संतोष स्वामी, सहायक आचार्य, श्री खुशल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

परिचय

भारतीय वाङ्गमय में, आयुर्वेद जीवन का विज्ञान है, जबकि पुराण इतिहास, भूगोल और संस्कृति का दर्पण हैं। आयुर्वेद मुख्य रूप से संहिता ग्रंथों (जैसे चरक, सुश्रुत) पर आधारित है, जबकि पुराणों का उद्देश्य जन–साधारण को सरल कहानियों के माध्यम से ज्ञान प्रदान करना था। स्वास्थ्य का विचार पुराणों में केवल शारीरिक आयाम तक सीमित नहीं थाय यह धर्म (कर्त्तव्य), अर्थ (धन), काम (इच्छा) और मोक्ष (मुक्ति) जैसे जीवन के चार लक्ष्यों (पुरुषार्थ) की प्राप्ति के लिए एक मूलभूत आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

1.2 पुराणों में स्वास्थ्य की संकल्पना

पुराणों में स्वास्थ्य को अक्सर नैतिक और शारीरिक शुद्धता से जोड़ा गया है। व्रत, उपवास, पवित्र नदियों में स्नान और विशिष्ट पौधों (जैसे पीपल, तुलसी, बेल) का पूजन न केवल धार्मिक क्रियाएँ हैं, बल्कि ये परोक्ष रूप से स्वास्थ्य और स्वच्छता को बढ़ावा देने वाले अनुष्ठान भी थे।

साहित्य समीक्षा

इस खंड में, पुराणों और आयुर्वेद के अंतर्संबंधों पर किए गए प्रमुख अकादमिक कार्यों का एक आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया जाएगा।

आलोचनात्मक विश्लेषणः उपलब्ध साहित्य मुख्य रूप से या तो आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों पर केंद्रित है या पुराणों के धार्मिकध्ऐतिहासिक पहलुओं पर। पुराणों में निहित व्यावहारिक स्वास्थ्य विचारों का व्यवस्थित, एकीकृत और स्वास्थ्य–केंद्रित दृष्टिकोण से अध्ययन अभी भी अपर्याप्त है। वर्तमान शोध इसी अंतराल को भरने का प्रयास करेगा।

शोध का औचित्य

प्रस्तुत शोध का औचित्य निम्नलिखित कारणों से सिद्ध होता हैः

ज्ञान अंतराल की पूर्तिः यह शोध आयुर्वेद के ज्ञान–आधार को पारंपरिक संहिताओं से लोक–प्रचलित धार्मिक ग्रंथों तक विस्तृत करता है, जिससे ज्ञान के स्रोतों का व्यापक परिदृश्य सामने आता है।

समग्र स्वास्थ्य की पुष्टिः यह अध्ययन दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय विचार में स्वास्थ्य को केवल शारीरिक बीमारी की अनुपस्थिति के रूप में नहीं, बल्कि नैतिकता (Moral), सामाजिकता और मन की शुद्धता से जुड़े एक समग्र दृष्टिकोण के रूप में देखा जाता था, जो आज के WHO (World Health Organization) के स्वास्थ्य मॉडल से साम्य रखता है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति के लिए प्रासंगिकतारू पुराणों का ज्ञान ग्रामीण और पारंपरिक समुदायों में आज भी गहरी जड़ें जमाए हुए है। इस ज्ञान का उपयोग स्वास्थ्य शिक्षा और निवारक चिकित्सा (Preventive Medicine) को लोगों की सांस्कृतिक मान्यताओं से जोड़कर अधिक प्रभावी बनाने में किया जा सकता है।

विधि तंत्र

4.1शोध पद्धति

यह अध्ययन एक शास्त्रीय–तुलनात्मक (Textual&Comparative) और गुणात्मक (Qualitative) शोध पद्धति का अनुसरण करेगा।

शास्त्रीय विश्लेषणः चयनित पुराणों के मूल संस्कृत श्लोकों और उनके आधिकारिक अनुवादों का गहरा पाठ और व्याख्या।

तुलनात्मक विश्लेषणः पुराणों में वर्णित स्वास्थ्य–संबंधी प्रथाओं की तुलना चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में वर्णित सिद्धांतों से की जाएगी।

विषय–वस्तु विश्लेषण (Content Analysis): पुराणों में 'आरोग्य', 'दीर्घायु', 'पथ्य', 'जड़ी–बूटी', 'स्नान' जैसे शब्दों और उनके संदर्भों को व्यवस्थित रूप से वर्गीकृत किया जाएगा।

4.2 स्रोत सामग्री

प्राथमिक स्रोत

महापुराणः अग्नि पुराण (चिकित्सा और विभिन्न विषयों का विश्वकोश), गरुड़ पुराण (मृत्यु और स्वास्थ्य संबंधी विचार), ब्रह्म वैवर्त पुराण (सृष्टि और जीवनचर्या), स्कन्द पुराण (तीर्थ और आरोग्य)।

आयुर्वेदिक संहिताएँः चरक संहिता, सुश्रुत संहिता (तुलना के लिए)।

द्वितीयक स्रोत

विभिन्न शोध पत्र, थीसिस, और विशेषज्ञ टीकाएँ जो पुराणों के विज्ञान या वनस्पति शास्त्र पर केंद्रित हैं।

शोध के उद्देश्य

पुराणों में वर्णित मानसिक, शारीरिक और पर्यावरणीय स्वच्छता से संबंधित विचारों का संकलन और वर्गीकरण करना।

पुराणों के विभिन्न आख्यानों (कहानियों) में निहित निवारक और उपचारात्मक चिकित्सा के उदाहरणों की पहचान करना।

पुराणों में निर्दिष्ट औषधीय द्रव्यों (जैसे विभिन्न प्रकार की लकड़ियाँ, जड़ी–बूटियाँ, रत्न और धातुएँ) और उनकी रोगनाशक शक्ति के पीछे के वैचारिक आधार की समीक्षा करना।

यह मूल्यांकन करना कि पुराण किस प्रकार आयुर्वेद के 'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम' (स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा) सिद्धांत को लोक–प्रचलित करने में सफल रहे।

परिकल्पना

परिकल्पना (H0): पुराण, भारतीय समाज में आयुर्वेद के स्वास्थ्य सिद्धांतों और औषधीय ज्ञान को प्रसारित करने वाले उपदेशात्मक एवं व्यावहारिक माध्यम थे, और इन विचारों में न केवल शारीरिक, बल्कि भावनात्मक और नैतिक स्वास्थ्य पर भी विशेष बल दिया गया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शास्त्रीय अध्ययन ने सफलतापूर्वक सिद्ध किया है कि पुराण भारतीय स्वास्थ्य ज्ञान की प्रणाली में एक अद्वितीय और अनिवार्य कड़ी हैं। उन्होंने आयुर्वेद के सिद्धांतों को धार्मिक आख्यानों के साथ एकीकृत करके स्वास्थ्य को धर्मपरायण जीवन का एक अभिन्न अंग बना दिया। पुराणों में स्वास्थ्य की अवधारणा केवल बीमारियों का इलाज नहीं है, बल्कि स्वच्छता, आहार नियंत्रण, मानसिक संतुलन और प्राकृतिक तत्वों के प्रति सम्मान पर आधारित एक जीवनशैली है। इन ग्रंथों ने आयुर्वेदिक द्रव्यों के उपयोग को धार्मिक अनुष्ठानों और दैनिक जीवन से जोड़कर उनका व्यापक प्रचार किया। निष्कर्षतः, पुराणों में निहित स्वास्थ्य संबंधी विचार आज भी समग्र स्वास्थ्य देखभाल मॉडल के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण वैचारिक और व्यावहारिक आधार प्रदान करते हैं।

ग्रंथ सूची

ग्रंथ सूचीव्यास, वेद. (उपलब्ध संस्करण). अग्नि महापुराण. वाराणसीः चौखम्बा प्रकाशन.

त्रिपाठी, ब्रहमानन्द. (2019). चरक संहिता. दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास.

सिंह, डॉ. विजयपाल. (2015). भारतीय संस्कृति में स्वास्थ्य और शुद्धि. नई दिल्लीः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास.

शर्मा, डॉ. पी.वी. (2010). आयुर्वेद का इतिहास. वाराणसीः चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान.

शर्मा, रामकृष्ण. (2022). पुराणों में वर्णित प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियाँ. भारतीय दर्शन पत्रिका, खंड 15(2).

Jolly, Julius. (1998). Indian Medicine. New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers.